Paper-V Evolution of Public Admn. as a discipline

अध्ययन की एक शाखा के रूप में लोक प्रशासन का विकास आधुनिक काल में ही हो सका है। हालाँकि प्राचीन काल से ही इस पर चिंतन और विचार होता रहा है लेकिन एक स्वतंत्र विधा के रूप में इस पर अध्ययन बहुत बाद में शुरू हुआ। इसके अध्ययन के विकास की कहानी 19वीं शताब्दी के अंत से शुरू होती है।

स्वतंत्र रूप से लोक प्रशासन (Public Administration) के अध्ययन के विकास का प्रयास संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ। 18वीं शताब्दी के अंत में हेमिल्टन द्वारा रचित विश्वकोश (encyclopedia) फेडरलिस्ट के 72 वें परिच्छेद में लोक प्रशासन की परिभाषा और इसके विषय-क्षेत्र की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की गई। लोक प्रशासन पर पहली स्वतंत्र पुस्तक की रचना 1812 ई० में "प्रिंसिपुल्स ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन" की गई जिसके लेखक चार्ल्स जीन योनिन थे।

धीरे-धीरे लोकप्रशासन का महत्व बढ़ता चला गया। प्रशासन की प्रक्रिया भी जटिल और वैशेषिक बनती गई। अतः इस प्रक्रिया को समझने के लिए विशेष अध्ययन की आवश्यकता होने लगी। लोक सेनाओं की स्थापना के साथ भी लोक प्रशासन का महत्व बढ़ गया। ~~1887 में वुडरो विल्सन द्वारा एक~~ अतः लोक प्रशासन के स्वतंत्र विषय के अध्ययन के लिए आंदोलन छेड़ दिया गया। संयुक्त राज्य अमेरिका में ही यह आंदोलन सबसे पहले छिड़ा। इसी पृष्ठभूमि में अमेरिका के उडरो विल्सन ने पॉलिटिकल साईंस क्वाटरली में पत्रिका में "द स्टडी ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन" नामक एक निबंध लिखकर लोक प्रशासन के अध्ययन की श्रृंखला में पहला कदम उठाया। इसमें उन्होंने लोक प्रशासन को राजनीति से स्वतंत्र रूप में वर्णित किया। इस प्रकार लोक प्रशासन का एक विषय के रूप में विकास का काल 1887 ई० से वर्तमान समय तक माना जाता है।

सुविधा की दृष्टि से विद्वानों द्वारा लोक प्रशासन के विकास के काल को पांच चरणों में विभाजित किया है—

प्रथम चरण - 1887-1926
द्वितीय चरण - 1927-1937
तृतीय चरण - 1938-1947
चतुर्थ चरण - 1948-1970
पांचवा चरण - 1971 - वर्तमान समय तक

लोक प्रशासन के विकास का प्रथम चरण 1887-1926 की अवधि को इसलिए माना गया है कि इस अवधि में विद्वानों द्वारा लोक प्रशासन के उद्देश्यों को राजनीति शास्त्र के उद्देश्य से अलग

Scanned with CamScanner

[Politics Administration Dichotomy राजनीति प्रशासन विभाजन] मानते हुए इसके विकास पर बल दिया गया। विल्सन ने अपने लेख The Study of Administration में लोक प्रशासन की विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए कहा था कि यह सरकारी कामकाज का ऐसा व्यावहारिक रूप है जिसे राजनीति की उठा-पटक से अलग रखा जाना चाहिए। विल्सन के बाद अमेरिका में अनेक लेखकों के निबंध तथा पुस्तकें प्रकाशित होने लगीं। 1900 ई० में प्रो० गुडनाउ ने भी अपना एक निबंध "Politics-Administration Dichotomy" प्रकाशित कराया जिसमें उन्होंने यह स्पष्ट करने की कोशिश की कि राजनीति का काम राज्य की इच्छा को स्पष्ट करना है तथा लोक प्रशासन का काम उस इच्छा को कार्यान्वित करना है। स्पष्ट है कि दोनों का अध्ययन क्षेत्र अलग-अलग है। लेकिन लोक प्रशासन पर एक पृथक पुस्तक की रचना सबसे पहले 1926 ई० में लियोनार्ड व्हाइट ने "Introduction to the Study of Public Administration" नामक की तथा 1927 में W.F. Willoughby ने "Public Administration" नामक पुस्तक रचना की। अपनी पुस्तक में White ने यह विचार प्रकट किया कि राज्य के उद्देश्य की पूर्ति का सबसे प्रमुख साधन लोक प्रशासन है।

[Principles of Administration प्रशासन के सिद्धांत] लोक प्रशासन के विकास के द्वितीय चरण (1927-1937) की शुरुआत W.F. Willoughby द्वारा प्रकाशित 'Principles of Public Administration' से मानी जाती है। विलोबी ने कहा कि लोक प्रशासन के अनेक सिद्धांत होते हैं जिन्हें कार्यान्वित करने से लोक प्रशासन में अपेक्षित सुधार हो सकता है। विलोबी के इस सैद्धांतिक विचारों की अवधारणा को लोक प्रशासन के संबंध में प्रतिपादित विभिन्न सिद्धांतों ने शक्ति प्रदान की।

[Era of challenge चुनौती भरा युग] लोक प्रशासन के विकास में तृतीय चरण (1938-1947) की शुरुआत 1938 में चेस्टर बर्नार्ड द्वारा लिखित पुस्तक The Functions of Executive से माना जाता है। उन्होंने अपनी पुस्तक में किसी सिद्धांत का वर्णन नहीं दिया बल्कि एक प्रकार से व्यवहारवादी उपागम का शिलान्यास किया। उनके अनुसार प्रशासन एक सहकारी सामाजिक क्रिया है जिसमें व्यक्तियों का आचरण प्रशासनीय कार्यों को विशेष रूप से प्रभावित करता है। 1946 में हर्बर्ट ए० साइमन ने अपनी पुस्तक 'Proverbs of Administration' प्रकाशित की जिसमें उन्होंने तथाकथित सिद्धांतवादियों की खिल्ली उड़ायी। 1947 में ही राबर्ट ए० डाहल ने 'The Science of Public Administration: Three Problems' प्रकाशित कराई जिसमें सिद्धांतवादियों की इन मान्यताओं को कि लोक प्रशासन एक विज्ञान है, का जोरदार खंडन किया।

Scanned with CamScanner

Crisis of Identity (पहचान का संकट)

लोक प्रशासन का चौथा चरण (1948-1970) लोक प्रशासन के इतिहास का संकटकाल रहा है। इस अवधि के दौरान लोक प्रशासन राजनीति विज्ञान की ओर मुखातिब हुआ, जहाँ इसका महत्व बिल्कुल गौण हो चुका था क्योंकि यह राजनीति शास्त्र से अपने को पृथक कर चुका था। कुछ विद्वानों ने लोक प्रशासन को निजी प्रबंधों के साथ जोड़कर प्रशासनिक विज्ञान बनाने का प्रयास किया। 1956 में 'Administration Science Quarterly' पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया गया। इस प्रयास में भी लोक प्रशासन को अपना निजी स्वरूप गँवाना पड़ा।

[Public Policy Perspective] लोक नीति दृष्टिकोण

लोक प्रशासन के पांचवें चरण (1971 से शुरू) में लोक प्रशासन के लोक नीति दृष्टिकोण का विकास हुआ है। लोक नीति कानूनों, अधिनियमों, निर्णयों अथवा कार्यवाहियों के द्वारा जनता की समस्याओं को सुलझाने का सरकार के द्वारा एक प्रयास है। नीतियाँ जनता के कल्याण एवं विकास हेतु बनाई जाती हैं। एक विधा (discipline) के रूप में लोक नीति दृष्टिकोण, जनता के लिए सरकार की नीतियों का अध्ययन है तथा इसके पक्ष विपक्ष एवं नीतियों को कैसे बेहतर बनाया जाय, इसका भी अध्ययन है। यहाँ लोक प्रशासन पुनः राजनीति शास्त्र के करीब है तथा इसमें अनेक प्रबंधकीय सिद्धांतों का समावेश किया गया है।

[Present Status of the discipline] वर्तमान अनुशासन की प्रास्थिति

अपने उद्भव काल से ही लोक प्रशासन मुख्य रूप से समाज और राजनीति की समस्याओं पर ही अपना ध्यान केन्द्रित रखा लेकिन अब यह सभ्य समाज के कार्यों का निष्पादन कर रहा है, जो सभ्यता के संरक्षण एवं विकास के लिए जरूरी है। इसकी भूमिका में सकारात्मक परिवर्तन ने इस विधा के विकास में अपना योगदान किया है। हालाँकि, वैश्वीकरण के इस युग में क्रियाकलापों के रूप में लोक प्रशासन की प्रास्थिति (Status) में कमी आई है।

1887 में औपचारिक जन्म से लेकर अबतक लोकप्रशासन राजनीति शास्त्र के उप-क्षेत्र की स्थिति से निकलकर अध्ययन के एक स्वायत्त शैक्षणिक क्षेत्र के रूप में स्थापित हो चुका है। आज सरकारी क्रियाकलापों से संबंधित नीति निर्माण, आज लोक प्रशासन का शैक्षणिक क्षेत्र बन गया है जबकि निर्णय-निर्माण इसका हृदय है। लोक प्रशासन का चरित्र आज बहुल-अनुशासनात्मक (multi-disciplinary) हो गया है।

—x—

Scanned with CamScanner